–द्रुतवाचन के साहित्यकार–

बी.ए. सेमेस्टर– ६

नरेश मेहता– (१९२२–)

कविता के वैष्णव व्यक्तित्त्व के लिए नए कवियों में चर्चित नरेश मेहता का जन्म १५ फरवरी १९२२ को शाजापुर (मालवा) में हुआ था। आधुनिक हिन्दी कवियों की पहली पंक्ति में गिने जाने वाले नरेश मेहता को 'अरण्या' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार (१९८८) तथा 'चैत्या' के लिए भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार (१९९२) प्राप्त हो चुका है।

नरेश मेहता धरती के प्रति आस्था के कवि हैं। उनके काव्य की विशेषता है– मानव और प्रकृति के साथ गहरा लगाव, मनुष्य की महिमा की स्वीकृति, कृषि जीवन के प्रति आकर्षण, वैश्विक दृष्टि तथा अखण्ड आस्था। **इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ–** 'बोलने दो चीड़ को', 'महाप्रस्थान', 'संशय की एक रात', 'बनपाखी सुनो', 'मेरा समर्पित एकांत', 'उत्सवा', 'तुम मेरा मौन हो', 'अरण्या', 'पिछले दिनों', 'नंगे पैर', 'आखिर समुद्र से तात्पर्य', 'देखना एक दिन '

–०–०–०